www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-3* *March 2025***

एकात्म मानव दर्शन– सामयिक विकास का भारतीय मॉडल एक विश्लेषण

डॉ0 पुष्पेन्द्र कुमार सिंह

प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, ब्रह्मावर्त पी जी कॉलेज मंधना, कानपुर

सारांश–

एकात्म मानव दर्शन, जिसे पं. दीनदयाल उपाध्याय ने प्रस्तुत किया, भारत के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह दर्शन मानव के आध्यात्मिक, नैतिक, और भौतिक विकास को एकीकृत करता है, जिससे समावेशी और संतुलित विकास संभव हो सके। एकात्म मानव दर्शन भौतिक समृद्धि के साथ–साथ आध्यात्मिक और नैतिक उन्नति को भी महत्वपूर्ण मानता है। यह मानता है कि केवल आर्थिक समृद्धि पर्याप्त नहीं हैय आत्म–पूर्ति और सांस्कृतिक निरंतरता भी आवश्यक हैं। यह दर्शन व्यक्त करता है कि व्यक्ति और समाज अविभाज्य हैं। व्यक्ति अपनी पूर्ण क्षमता समाज के साथ संबंध के माध्यम से ही प्राप्त कर सकता है, इसलिए दोनों का विकास समानांतर होना चाहिए। एकात्मक मानव दर्शन स्थानीय आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है। यह स्वदेशी संसाधनों और उद्योगों के उपयोग पर जोर देता है, जिससे विदेशी निर्भरता कम हो और घरेलू अर्थव्यवस्था सशक्त हो। यह दर्शन शासन के लिए नैतिकता और ध र्म के पालन की आवश्यकता पर बल देता है। नीतियां सभी नागरिकों के कल्याण, न्याय, समानता और अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बनाई जानी चाहिए। एकात्म मानव दर्शन, भारत की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करते हुए आधुनिकता को अपनाने का मार्ग प्रस्तुत करता है। यह पूंजीवाद और समाजवाद दोनों के विकल्प के रूप में उभरता है, जो भारतीय संदर्भ में सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों का समाधान प्रदान करता है। इस शोध पत्र के माध्यम से वर्तमान भारत में स्वामी दीनदयाल उपाध्याय के एकात्मक दर्शन के चिंतन के परिप्रेक्ष्य में विकास की विभिन्न दिशाओं का विश्लेषण प्रस्तुत कर भारतीय मॉडल कि मानवीय उपादेयता का परीक्षण किया जाएगा।

मुख्य–शब्द– एकात्म मानववाद, राष्ट्रवाद, स्वदेशी, चिति और विराट, धर्म, संस्कृति और राजनीति।

परिचय–

पंडित दीन दयाल उपाध्याय भारतीय राजनीतिक विचारक, समाज सुधारक और भारतीय जनसंघ के महान नेता थे। उनका विचार भारतीय समाज और राजनीति में एक नई दिशा देने वाला था। उनका प्रमुख चिंतन 'एकात्म मानववाद' और 'राष्ट्रवाद' के सिद्धांतों के इर्द–गिर्द घूमता है, जिसमें उन्होंने भारतीय संस्कृति, समाज और राजनीति को एक नई दृष्टि से देखने का आग्रह किया। उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता में समग्रता, सहिष्णुता और मानवता की प्रमुख विशेषताएँ हैं, जो पश्चिमी सभ्यता की यांत्रिकता और भौतिकवाद से परे हैं।

उद्देश्यः आज जब पूरे विश्व में विकास की प्रतिद्वंदिता को लेकर समस्त प्रकार के साधनों के इस्तेमाल पर विचार किया जा रहा है विशेष रूप से पूंजीवादी, नव उपनिवेशवादी मॉडल को लेकर विकसित और विकासशील देशों के बीच अपनी आर्थिकी को उन्नति देने के भरसक प्रयास किया जा रहे हैं ऐसे में इस विश्व व्यवस्था के मध्य भारत को भी क्या उन्ही मॉडल की अनुकृति पर चलने की आवश्यकता है, जिसमेंअर्थ केंद्रित सभ्यता में मनुष्यता कहीं पीछे छूटती नजर आती है. वस्तुस्थिति समस्त प्रकार के विकास और अर्थव्यवस्था का मूल उद्देश्य मनुष्यता और उसका संतुलित विकास तथा जीवन के परम साध्य को साधना है, क्या विकास के लिए भारत भारतीयता आधारित कोई स्व विकसित मॉडल अपना सकता है क्या? और जब स्व– विकसित मॉडल की बात आती है तब पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानव दर्शन का समेकित विचार विकास का सर्वोत्तम मॉडल बनकर प्रयुक्त हो सकता है क्या? इन्हीं विभिन्न प्रकार

के पहलुओं पर गहन विचार करनाऔर एक सार्थक निष्पत्ति पर पहुंचना इस शोध पत्र का मूलभूत उद्देश्य है, जिससे आपाधापी से ग्रस्त इस विश्व में भारत एक मानवता केन्द्रित संबंधित मॉडल पर चलकर और विकसित भारत के एक उच्च मुकाम पर आरूढ़ होकर पूरे विश्व के समक्ष एक मिसाल कायम कर सकता है।

प्रयुक्त प्रविधिः शोध पत्र शीर्षकऔर उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करने पर यह स्वत स्पष्ट होता है कि विषय का मर्म एक ऐसे मॉडल को विकसित करना है जिस पर चलकर भारत मनुष्य केंद्रित अर्थव्यवस्था के रास्ते विकसित होकर पूरी दुनिया के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत कर सके और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक है कि जहां एक तरफ उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक है वहीं दूसरी तरफ वर्तमान में प्रचलित अर्थव्यवस्था के विभिन्न मॉडल का गुण दोष आध ाारित मूल्यांकन की आवश्यकता है जिससे कि वर्तमान में प्रचलित अर्थव्यवस्था के गुण दोष के मूल्यांकन के आधार पर तथा पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के द्वारा विकसित एकांत मानव दर्शन के विचार के समेकित गुण दोष के आधार पर भावी भारत के विकास का एक पथ और एक रूपरेखा खींची जा सके अतः स्पष्ट है की प्रस्तुत शोध पत्र में मुख्यतः साहित्य सर्वेक्षण अध्ययन पद्धति,मूल्यांकन पद्धति,विश्लेषणात्मक पद्धति और विवरणात्मक पद्धतिका अनुप्रयोग मुख्य रूप से शोध पत्र के लक्ष्य को सार्थक दिशा प्रदान करेगा

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था मॉडल का मूल्याङ्कन

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था एक आर्थिक प्रणाली है जिसमें उत्पादन और वितरण के साधन निजी स्वामित्व में होते हैं और बाजारों द्वारा मूल्य निर्धारण और संसाधनों का आवंटन किया जाता है। इस प्रणाली में लाभ की प्रेरणा मुख्य भूमिका निभाती है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के गुण और दोष दोनों होते हैं। आइए हम इसके गुण और दोषों का मूल्यांकन करते हैं

गुण–

1. पूंजीवाद में प्रतिस्पर्धा और निजी उद्यमिता को बढ़ावा मिलता है, जिससे उत्पादन और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होता है। यह आर्थिक विकास को गति देता है।
2. चूंकि कंपनियों को लाभ अर्जित करने के लिए नवाचार की आवश्यकता होती है, इसलिए पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में प्रौद्योगिकी और नवाचार का विकास तेजी से होता है। इससे समाज में बेहतर उत्पाद और सेवाएं मिलती हैं।
3. बाजार की मांग और आपूर्ति के सिद्धांतों के आधार पर, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में संसाधनों का वितरण आमतौर पर अधिक कुशल होता है। यह बाजार द्वारा नियंत्रित होता है, जहां कीमतें उपभोक्ता और निर्माता के बीच संतुलन बनाती हैं।
4. पूंजीवाद में व्यक्तियों को अपनी आर्थिक गतिविधियों में स्वतंत्रता मिलती है। वे अपनी इच्छा से व्यापार शुरू कर सकते हैं और आर्थिक निर्णय ले सकते हैं, जिससे स्वावलंबन को बढ़ावा मिलता है।
5. प्रतिस्पर्धा की उपस्थिति के कारण कंपनियों को अपने उत्पादों या सेवाओं की कीमतें नियंत्रित और उपभोक्ताओं के लाभ में वृद्धि करनी पड़ती है।

दोष–

1. पूंजीवाद में संपत्ति और आय का वितरण असमान होता है। कुछ लोग अत्यधिक समृद्ध होते हैं, जबकि अन्य गरीबी में जीवन यापन करते हैं। यह समाज में असमानता को बढ़ावा देता है।
2. कुछ वस्तुएं और सेवाएं, जैसे स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा आदि, गरीब और कम आय वाले वर्गों के लिए महंगी हो सकती हैं, जिससे उनकी पहुंच सीमित होती है।
3. लाभ अर्जित करने के लिए, पूंजीवादी कंपनियां प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक शोषण कर सकती हैं, जो पर्यावरणीय संकट और प्रदूषण का कारण बनते हैं।
4. अगर बाजार पर कुछ कंपनियों का वर्चस्व हो, तो यह नवाचार की कमी और उपभोक्ताओं के लिए विकल्पों की कमी पैदा कर सकता है। कंपनियां अपनी स्थिति का फायदा उठाकर कीमतें बढ़ा सकती हैं और गुणवत्ता में कमी कर सकती हैं।
5. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में बाजारों के उतार–चढ़ाव के कारण आर्थिक अस्थिरता हो सकती है। आर्थिक संकट, जैसे वित्तीय मंदी, पूंजीवाद में आम होते हैं, जो लाखों लोगों को बेरोजगार और संकट में डाल सकते हैं।

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के अपने फायदे और नुकसान हैं। यह समाज में तेजी से विकास और नवाचार को प्रोत्साहित कर सकती है, लेकिन इसके साथ–साथ यह आर्थिक असमानता और पर्यावरणीय समस्याओं को भी जन्म देती है। एक आदर्श प्रणाली के रूप में, पूंजीवाद को सरकारी हस्तक्षेप और सामाजिक सुरक्षा नेटवर्क के साथ संयोजित किया जा सकता है ताकि इसके नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके।समूची सभ्यता के केंद्र में मनुष्य है मनुष्य यदि विषमता और व्यवस्था का शिकार है पर्यावरण मनुष्यता के प्रतिकूल है प्रतिस्पर्धा स्पर्धा में सीमित संख्या में मनुष्य का हित साध ान ही कर रहा है मनुष्य मनुष्य का दुश्मन बन कर बैठा है तो इस प्रकार के विकास के मॉडल, जिससे कुछ सीमित तबके का हित साधन हो और बाकी अधिकांश के लिए यह अभिशाप बन जाए इसे किसी भी दशा में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय के चिंतन के मुख्य पहलू–

1. एकात्म मानववाद (Integral Humanism)– पंडित दीन दयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद भारतीय समाज और संस्कृति के मूल सिद्धांतों पर आधारित था। इसके अनुसार, मानव केवल भौतिक नहीं, बल्कि आध यात्मिक और सामाजिक पहलुओं से भी जुड़ा हुआ होता है। उन्होंने पश्चिमी समाजों में व्याप्त भौतिकवाद और प्रतिस्पर्धा की आलोचना की और यह कहा कि समाज को उसकी समग्रता में देखना चाहिए, जिसमें व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच संतुलन स्थापित हो।
2. राष्ट्रवाद और स्वदेशी विचारः पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचार में राष्ट्रवाद की अवधारणा केवल एक राजनीतिक संस्था नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान थी। उन्होंने भारतीय समाज को उसकी पारंपरिक जड़ों से जोड़ने की आवश्यकता को महसूस किया। उनका मानना था कि भारतीय संस्कृ ति और सभ्यता में आत्मनिर्भरता, पारिवारिक व्यवस्था और सहकारिता का महत्व है, जो पश्चिमी सभ्यता में कहीं नहीं देखा जाता।
3. समाजवाद का भारतीय रूपः पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने समाजवाद को भारतीय संदर्भ में समझने का प्रयास किया। उनका मानना था कि भारतीय समाज में समता और न्याय की परिभाषा पश्चिमी विचारधारा से भिन्न है। उन्होंने समाजवाद को भारतीय दृष्टिकोण से लागू करने का सुझाव दिया, जिसमें पूंजीवाद के भोगवादी और शोषक तत्त्वों से बचते हुए समाज के हर वर्ग के लिए समान अवसर और कल्याण सुनिश्चित किया जाए।
4. ग्राम स्वराज और ग्रामीण विकासः पंडित दीन दयाल उपाध्याय का मानना था कि देश की असली ताकत उसके गांवों में छिपी है। उन्होंने ग्राम स्वराज का समर्थन किया, जिसमें गांवों को आत्मनिर्भर बनाना और ग्राम–स्तरीय विकास को प्राथमिकता देना आवश्यक था। उन्होंने यह भी कहा कि गाँवों का विकास राष्ट्रीय विकास के मूलभूत आधार के रूप में होना चाहिए।
5. धर्म, संस्कृति और राजनीतिः पंडित दीन दयाल उपाध्याय का यह भी मानना था कि धर्म और राजनीति का संबंध केवल आध्यात्मिक दृष्टि से होना चाहिए, न कि किसी एक धर्म को अनिवार्य रूप से लागू करने के रूप में। उन्होंने भारतीय संस्कृति और जीवन पद्धति को ही राष्ट्र की असली पहचान बताया और कहा कि भारतीय राजनीति को धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से जोड़ा जाना चाहिए।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्मक मानववाद (Integral Humanism) चिंतन की समकालीन प्रासंगिकता आज के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिपेक्ष्य में बहुत महत्वपूर्ण है। उनका विचारधारा भारतीय समाज के लिए एक विशिष्ट दिशा प्रस्तुत करती है, जो मानवता, समाज, और राष्ट्र के विकास को संतुलित ढंग से देखने का दृष्टिकोण प्रदान करती है। उनका यह चिंतन न केवल भारत के लिए, बल्कि समूचे संसार के लिए भी प्रासंगिक है, विशेषकर जब हम वैश्वीकरण, आर्थिक असमानता और सामाजिक तनाव के समय में जी रहे हैं।

1. मानव के समग्र विकास का दृष्टिकोण–

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने 'एकात्मक मानववाद' के सिद्धांत के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि मानव का विकास केवल भौतिक सुख–सुविधाओं तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उसका मानसिक, आत्मिक, और नैतिक विकास भी उतना ही महत्वपूर्ण है। आज के समय में जब भौतिकवाद और उपभोक्तावाद का प्रभाव बढ़ रहा है, उनका यह दृष्टिकोण लोगों को जीवन के उच्चतम लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

2. सामाजिक और आर्थिक समानता–

उपाध्याय जी का मानना था कि आर्थिक विकास को केवल एक वर्ग या समूह तक सीमित नहीं किया जा सकता,

बल्कि समग्र समाज का विकास करना आवश्यक है। उनका दृष्टिकोण यह था कि समाज के हर वर्ग, विशेषकर गरीब और पिछड़े वर्गों, को समान अवसर मिलना चाहिए। आज जब हम सामाजिक असमानता, बेरोजगारी और गरीबी जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं, उनका यह चिंतन हमें एक समावेशी विकास की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है।

3. राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक पहचान–

पंडित जी ने भारतीय संस्कृति और परंपराओं को आधार बनाकर एक ऐसे राष्ट्र का सपना देखा, जो अपनी प्राचीन संस्कृति के साथ आधुनिकता को समाहित करे। उनका विचार था कि भारत को अपने पारंपरिक मूल्यों और आत्मनिर्भरता को बनाए रखते हुए विश्व में अपनी विशेष पहचान बनानी चाहिए। आज के वैश्वीकरण के दौर में जब पश्चिमी सांस्कृतिक प्रभाव बढ़ रहा है, उनका यह चिंतन भारत की सांस्कृतिक पहचान और आत्मनिर्भरता को सशक्त बनाने की दिशा में प्रासंगिक है।

4. स्थिर और संतुलित विकास–

एकात्मक मानववाद चिंतन में उपाध्याय जी ने यह भी बताया कि विकास केवल भौतिक संसाधनों के आधार पर नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे समाज के नैतिक और सांस्कृतिक पहलुओं से भी जोड़ा जाना चाहिए। उनका यह विचार आज के समय में बहुत महत्वपूर्ण है जब हम पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन और अनियंत्रित विकास के दुष्प्रभावों से जूझ रहे हैं। उनका यह चिंतन हमें स्थिर और संतुलित विकास की दिशा में प्रेरित करता है।

5. स्वदेशी और आत्मनिर्भरता–

पंडित उपाध्याय जी ने आत्मनिर्भरता और स्वदेशी की अवधारणा को भी अहमियत दी। उनका मानना था कि भारत को विदेशी वस्त्रों और संसाधनों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, बल्कि अपने संसाधनों और श्रम का उचित उपयोग करना चाहिए। यह चिंतन आज भी भारत में स्वदेशी उत्पादों और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने के लिए प्रासंगिक है, खासकर जब हम वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में अस्थिरता और आत्मनिर्भरता के महत्व को समझते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्मक मानववाद चिंतन आज के समय में अत्यधिक प्रासंगिक है क्योंकि यह समाज के सभी पहलुओं को संतुलित और समग्र दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता को महसूस कराता है। उनका यह चिंतन न केवल भारत के लिए, बल्कि समग्र मानवता के लिए एक आदर्श है, जो हमें सिर्फ भौतिक सुखों की बजाय मानवता और नैतिकता के मूल्यों को प्राथमिकता देने की दिशा में मार्गदर्शन करता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्मक मानववाद चिंतन भारतीय समाज सुधार के लिए एक समग्र और स्थायी मॉडल प्रस्तुत करता है, जो न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक दृष्टिकोण से भी समाज के सुधार में सहायक हो सकता है। उनका यह चिंतन विशेष रूप से भारतीय समाज की विविधता, असमानता और आत्मनिर्भरता के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। इसे प्रायोगिक रूप से भारतीय समाज में लागू करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण मॉडल निम्नलिखित हो सकते हैं–

1. समाज के सभी वर्गों के समग्र विकास का मॉडल–

पंडित उपाध्याय का एकात्मक मानववाद समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेषकर गरीब, आदिवासी, और पिछड़े वर्गों के समग्र विकास की बात करता है। यह मॉडल निम्नलिखित पहलुओं पर आधारित हो सकता है–

1. शिक्षा और कौशल विकासः एक समान और समग्र शिक्षा प्रणाली लागू करना, जिसमें हर वर्ग को समान अवसर प्राप्त हो। शिक्षा को केवल रोजगार तक सीमित न रखकर, आत्मनिर्भरता, नैतिकता और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करने पर जोर दिया जाए।
2. स्वास्थ्य सेवाएंः हर नागरिक को सस्ती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाएं, ताकि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हो सके। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

2. स्वदेशी और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने का मॉडल–

उपाध्याय जी का एकात्म मानववाद विचार यह भी प्रोत्साहित करता है कि भारत को अपनी स्वदेशी संस्कृति, वस्त्र, कुटीर उद्योग और कृषि प्रणालियों को बढ़ावा देना चाहिए। इसे समाज सुधार में इस तरह लागू किया जा सकता है–

1. कुटीर उद्योगों का पुनरुद्धारः छोटे पैमाने पर उद्योगों को बढ़ावा देना, जैसे कि हस्तशिल्प, हथकरघा, और पारंपरिक कृषि पद्धतियों को समर्थन देना। इससे ग्रामीण इलाकों में रोजगार सृजन होगा और लोग अपनी पारंपरिक कला और संस्कृति से जुड़ेंगे।
2. स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देनाः उपभोक्ताओं को स्थानीय उत्पादों का महत्व समझाना और उनके उपयोग को प्रोत्साहित करना। इसे देशभक्ति और आत्मनिर्भरता के रूप में प्रचारित किया जा सकता है।

3. सामाजिक समरसता और एकता का मॉडल–

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक एकता की बात करता है। इसे समाज सुधार में इस तरह लागू किया जा सकता है–

1. सांस्कृतिक कार्यक्रम और मंचः विभिन्न जातियों, धर्मों और समुदायों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों और मेलों का आयोजन करना। इससे समाज में समरसता और भाईचारे की भावना विकसित हो सकती है।
2. सामाजिक संघर्षों का समाधानः जातिवाद, धार्मिक भेदभाव और सांप्रदायिक तनाव के मामलों में समझदारी और संवाद के माध्यम से समाधान की ओर बढ़ना, ताकि समाज में शांति और एकता बनी रहे।

4. स्थायी और संतुलित विकास का मॉडल–

पंडित जी का एकात्म मानववाद पर्यावरण के प्रति संवेदनशील विकास की आवश्यकता पर बल देता है। इसे प्रायोगिक रूप से लागू करने का तरीका हो सकता है–

1. स्थानीय संसाधनों का सही उपयोगः पर्यावरणीय नुकसान को कम करने के लिए स्थानीय संसाधनों का समुचित उपयोग करना। जैसे, सौर ऊर्जा, जल संचयन, और जैविक खेती को बढ़ावा देना।
2. नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारीः समाज के प्रत्येक व्यक्ति को नैतिक जिम्मेदारी का एहसास दिलाना कि वह न केवल अपने लिए, बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए भी कार्य कर रहा है। यह शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से संभव हो सकता है।

5. नैतिक शिक्षा और नागरिकता का मॉडल–

पंडित जी के एकात्म मानववाद में नैतिकता और मानवता का महत्वपूर्ण स्थान है। इसे समाज सुधार में लागू करने के लिए–

1. नैतिक शिक्षाः स्कूलों और कॉलेजों में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य करना, ताकि युवा पीढ़ी में समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की भावना जागृत हो।
2. समाज सेवाओं का प्रोत्साहनः समाज में सामूहिक कार्यों और स्वयंसेवक गतिविधियों को बढ़ावा देना। यह समाज में सहायकता, सहयोग और परस्पर समर्थन की भावना पैदा करेगा।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्मक मानववाद चिंतन का प्रायोगिक रूप से भारतीय समाज सुधार पर प्रभावी उपयोग एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता को दर्शाता है। यह समाज के हर वर्ग के समग्र विकास, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने, सामाजिक समरसता, पर्यावरणीय सतत विकास और नैतिक शिक्षा के माध्यम से समाज को एक सशक्त दिशा प्रदान करता है। इन विचारों को लागू करने से भारतीय समाज में सशक्त और स्थायी बदलाव संभव हो सकता है।

भारतीय जनता पार्टी (BJP) की नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन को ध्यान में रखते हुए देश के विकास के लिए कई पहल की हैं। उनका एकात्म मानववाद और अर्थशास्त्र के सामाजिक दृष्टिकोण पर आधारित विचार भारतीय राजनीति और नीति निर्माण में महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। नरेंद्र मोदी सरकार ने उपाध्याय के विचारों को लागू करने के लिए जो प्रमुख प्रयास किए हैं, वे निम्नलिखित हैं–

1. आत्मनिर्भर भारत (Atmanirbhar Bharat) अभियान–

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत था आत्मनिर्भरता। उनकी सोच थी कि भारत को अपनी आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना चाहिए। मोदी सरकार ने ष्आत्मनिर्भर भारतष् अभियान के माध्यम से इस विचार को लागू किया। यह अभियान भारत को विदेशों पर निर्भरता से मुक्त करने और अपने घरेलू उद्योगों, कुटीर उद्योगों, और तकनीकी क्षमताओं को सशक्त बनाने की दिशा में है। इसके तहत–

1. मेक इन इंडिया और मेक फॉर द वर्ल्ड जैसी पहलें शुरू की गईं।
2. छोटे और मझोले उद्योगों (डैडमे) को बढ़ावा देने के लिए विशेष पैकेज दिए गए।
3. ग्रामीण उद्योगों और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित किया गया, जो पंडित उपाध्याय के चिंतन के अनुकूल है।

2. ग्रामीण विकास और कल्याण योजनाएँः

पंडित उपाध्याय का जोर ग्रामीण विकास और निम्न वर्ग के कल्याण पर था। नरेंद्र मोदी सरकार ने इस दिशा में कई

योजनाओं की शुरुआत की–

1. प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY): यह योजना देश के गरीब और निम्न आय वर्ग के लोगों को सस्ते घर प्रदान करने के लिए बनाई गई है, ताकि वे जीवन स्तर में सुधार कर सकें।
2. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (च्ड–झ्प्ै।छ): किसानों के लिए यह योजना आर्थिक मदद देने के उद्देश्य से लागू की गई है।
3. स्वच्छ भारत मिशनः इस मिशन के तहत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता का स्तर बढ़ाने के लिए शौचालय निर्माण और सफाई अभियान चलाया गया।
4. न्रज्ञूसं ल्वरंदंरू इस योजना के तहत ग्रामीण महिलाओं को मुफ्त एलपीजी गैस कनेक्शन प्रदान किया गया, जिससे उनका जीवन स्तर बेहतर हो सके।

3. आधुनिकता और प्रौद्योगिकी के साथ सांस्कृतिक धरोहर का समागमः

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद चिंतन भारत की सांस्कृतिक धरोहर को महत्व देता था। मोदी सरकार ने भारतीय संस्कृति, परंपराओं और आधुनिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखने की कोशिश की है।

1. भारत सरकार द्वारा संस्कृति मंत्रालय की पहलें: जैसे कला और शिल्प को बढ़ावा देना, भारतीय भाषा और साहित्य को प्रोत्साहित करना और सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करने के लिए कई योजनाएँ।
2. प्रधानमंत्री स्टार्टअप इंडियाः यह योजना भारतीय युवाओं को तकनीकी नवाचारों, स्टार्टअप्स और व्यवसायों को बढ़ावा देने की दिशा में काम करती है, जो भारतीय समाज के पुराने कौशल और नई तकनीक को जोड़ती है।

4. समाज में समरसता और सामूहिकता का निर्माण–

पंडित उपाध्याय का चिंतन समाज में समानता, समरसता और सामूहिक विकास के सिद्धांत पर आधारित था। नरेंद्र मोदी सरकार ने इन मूल्यों को ध्यान में रखते हुए कई योजनाएँ बनाई हैं–

1. प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY): यह योजना समाज के हर वर्ग को बैंकों से जोड़ने और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई है, ताकि आर्थिक असमानताएँ कम हो सकें।
2. प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजनाः यह योजना असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए बनाई गई है।

5. नैतिकता और समाज की जिम्मेदारीः

पंडित उपाध्याय का मानना था कि नैतिक शिक्षा और समाज की जिम्मेदारी महत्वपूर्ण हैं। मोदी सरकार ने इस दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करते हुए कई कदम उठाए–

1. नारी शक्ति को बढ़ावा देने के लिए योजनाएँरू जैसे बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए वित्तीय सहायता आदि।
2. नैतिकता और पारदर्शिताः प्रधानमंत्री ने शासन में पारदर्शिता और भ्रष्टाचार पर कड़ा रुख अपनाया, और ई–गवर्नेंस तथा डिजिटल इंडिया जैसे पहलें शुरू कीं।

6. सामाजिक न्याय और कल्याण–

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि समाज का विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक सबसे कमजोर वर्गों की स्थिति सुधार न हो। मोदी सरकार ने इस दिशा में कई कदम उठाएरू

1. स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधाररू आयुष्मान भारत योजना जैसी पहल से करोड़ों गरीब भारतीयों को स्वास्थ्य सेवाएं सस्ती और सुलभ बनाने की कोशिश की गई।
2. श्रमिकों और गरीबों के लिए योजनाएँ: जैसे गरीब कल्याण रोजगार अभियान, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना आदि, ताकि गरीब और श्रमिक वर्ग को सशक्त किया जा सके।

नरेंद्र मोदी सरकार ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद चिंतन को राष्ट्रीय विकास की दिशा में कई योजनाओं और नीतियों के रूप में लागू किया है। उनका आदर्श भारतीय समाज को समग्र रूप से उन्नति की ओर ले जाने के लिए है, जो समाज के हर वर्ग को साथ लेकर चलता है। मोदी सरकार ने उपाध्याय जी के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए आर्थिक समावेशन, आत्मनिर्भरता, सामाजिक समरसता, और सांस्कृतिक पहचान को महत्व दिया है। इन

पहलुओं का उद्दीपन भारतीय समाज में व्यापक बदलाव लाने के लिए किया जा रहा है। पंडित दीन दयाल उपाध्याय का चिंतन भारतीय समाज, राजनीति और संस्कृति की वास्तविकता से जुड़ा हुआ था। उनका 'एकात्म मानववाद' न केवल भारतीय विचारधारा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना, बल्कि यह एक नई दिशा देने वाला सिद्धांत साबित हुआ। उनका आदर्श आज भी भारतीय राजनीति और समाज के लिए प्रासंगिक है, विशेषकर जब हम स्वदेशी विकास, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता की बात करते हैं।

उपयोगी ग्रंथ सूची–

1. उपाध्याय, दीनदयाल, (2014), भारतीय अर्थ–नीतिः विकास की एक दिशा, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ।
2. उपाध्याय, दीनदयाल, (2014), पंडित दीनदयाल उपाध्याय–विचार दर्शनः एकात्म मानव दर्शन, सुरूचि प्रकाशन, केशव कुंज, झंडेवालान, नई दिल्ली।
3. उपाध्याय, दीनदयाल, (1958), भारतीय अर्थनीतिः विकास की एक दिशा,राष्ट्रधर्म पुस्तक प्रकाशन, लखनऊ।
4. उपाध्याय, दीनदयाल, (1960), राष्ट्र जीवन की समस्याएँ, राष्ट्रधर्म प्रकाशन, लखनऊ।
5. उपाध्याय, दीनदयाल, (2008), एकात्म मानवाद, जागृति प्रकाशन, नोएडा।
6. उपाध्याय, दीनदयाल, (2011), एकात्म मानव दर्शन, एकात्म मानव दर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।
7. उपाध्याय, दीनदयाल, (2014), एकात्म मानवादरू सिद्धांत, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. उपाध्याय, दीनदयाल, (2014), एकात्म मानवादरू विवेचन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. उपाध्याय, दीनदयाल, (2014), राष्ट्र चिंतन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ।
10. उपाध्याय, दीनदयाल, (2016), दीनदयाल उपाध्यायः संपूर्ण वाङ्मय (खंड–12), प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. उपाध्याय, दीनदयाल, (1959, 30 मार्च), विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था से ही मानव मूल्यों की रक्षा, पांचजन्य।
12. शर्मा, महेशचन्द्र, (2017), पंडित दीनदयाल उपाध्यायः कर्तव्य एवं विचार, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली।
13. शर्मा, महेशचन्द्र, (2018), दीनदयाल उपाध्यायः कर्तव्य एवं विचार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
14. ठेंगड़ी, दत्तोपन्त, (1970), एकात्म मानववादः एक अध्ययन, भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति, उत्तर प्रदेश।
15. देवधर, विश्वनाथ नारायण, (2014), पंडित दीनदयाल उपाध्यायरू विचार दर्शन, खंड–7 (व्यक्ति दर्शन), सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली।
16. कुलकर्णी, शरद अनन्त, (2014), पंडित दीनदयाल उपाध्यायरू विचार दर्शन, खंड–4, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली।
17. धवन, मदन मोहन, (तिथि निर्दिष्ट नहीं), पंडित दीनदयाल उपाध्यायरू विचार दर्शन, एकात्म मानव, कानपुर।
18. दीक्षित, इला त्रिपाठी,– दीक्षित, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, (2017), भारतीय राजनीति में पं. दीनदयाल उपाध्याय का योगदान, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली।

Cite this Article-

डॉ0 पुष्पेन्द्र कुमार सिंह, "एकात्म मानव दर्शन–सामयिक विकास का भारतीय मॉडल एक विश्लेषण", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:03, March 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i3008
Published Date- 13 March 2025